पावका नः सरस्वती धियो विश्वा विराजति



(एषा शोधपत्रिका केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालयस्य आर्थिक सहयोगेन प्रकाशिता)



अर्द्धवार्षिक-संस्कृत-शोधपत्रम् नवमवर्षम्, प्रथम-द्वितीय युक्तसंख्या (डिसेम्वर, २०२२)

देवसंस्कृति देववाणी मन्दिराधीन अमितारंजन-**शंकरीवाला-वेदविद्या-मन्दिरं** (प.व. सर्वकारेण पञ्चीकृतम् - नं - s/IL/५५५५३-२००८-०९)

पश्चिमवङ्ग

M: 9434660498

सूचीपत्रम्

Ā:

	भारतीयदर्शनदिशा विद्याऽविद्ययो पर्यालोचनम्	:	ड. सन्ध्या पात्र	
	अद्वैतवेदान्तमतेन प्रत्यक्ष प्रमितेः स्वरूपम्	:	ड. गोविन्द कुमार पात्र	
	अद्वैतवेदान्तस्य दृष्टौचैतन्यसभाया एव पारमार्थिकत्ववि	चारः :	विश्वजित् घोष	8
	आधुनिक मनने श्रीमद्भगवत्गीतायाः धर्मभावना	:	जयन्त नन्दी	,
	सम्प्रदाय निरपेक्षता च साम्यविषयिनीभावना	:	सुश्री निवेदिता अधिकारी	8
	चन्द्रवंशीयाभिलेखाणां दृष्ट्या वङ्गे पौराणिक धर्मः	:	चेतना मुखार्जी	2
	श्रीमद्भागवते वेदपर्यायशब्दाः अध्ययनमेकम्	-	नीलिमा सरकार	, 2
	व्याकरणदर्शने मोक्षः अध्ययनमेकम्		अतनु आढ्य	?:
	व्याकरणज्ञानस्य प्रयोजनीयता : एकं सक्षिसमध्ययनम्		अनुपम दत्त	·
	व्यासदेवस्य महाभारते (उद्योगशान्त्यानुशासने)	:	गनेश लेट	38
	परिवेशभावना – एकं संक्षिसाध्ययनम्			Α,
	अभिज्ञान शकुन्तलं नाटके वस्त्रादिभूषणसमीक्षा	:	सुप्रिय राय	33
	उपनिषत्सु प्रतिफलितं मनोविज्ञानम्	:	अमित साना	۲٠ ع
	ऋग्वेदिकसूर्यसूक्तेषु तथा पौराणिकस्तवेषु	:	अभिषेक घोष	
	सूर्याविलम्बिनी परिक्रमा			85
]	मुद्राराक्षसनाटके नारी : एका गवेषणा	:	सुलग्ना प्रधान	
	आत्मवाद्कथनम्	:	ड. अजित कुमार मण्डल	40
9	कृमारसम्भवे वस्त्राभरणम् : एकम् अध्ययनम्	:	सुधामय हालदार	48
~	गोकायतिशवसंगीते मूर्तिविज्ञानस्य प्रतिबिम्बनम्	•	शोभन लाल मिश्र	५८
	वाहसूक्तम्, एका परिक्रमा	•	शम्पा दास	६२
श्री	मद्भगवद्गीतायाः दार्शनिकतत्त्वम्	•		६६
		•	ड. श्री वासुदेव भट्टाचार्य्य	६९

सम्प्रदायनिरपेक्षता च साम्यविषयिणीभावना

सुश्री निवेदिता अधिकारी*

जगित यथा यथा सम्प्रदायानां सङ्ख्या वर्धते तथा तथा तेषां परस्परिसम् विरोधोऽपि वृद्धिं गच्छित। सत्यवादितासिहष्णुता-प्रभृतीन् गुणान् स्तुवन्तोऽपि नाना साम्प्रदायिकाः अन्योन्यस्मै द्रुह्यन्ति, तानि तानि च अकिञ्चित्कराणि
निमित्तानि आदाय मिथः कलहायन्ते। एष निर्विवेकः सम्प्रदाय-निर्बन्धः न केवलं निर्विद्येषु अपितु कृतिवद्येषु प्रजातनेषु
नृपेषु च प्रायः समानः अवलोक्यते। एवं हि सित न किमिप राष्ट्रं यथेष्टम् अभ्युद्ययं शान्ति-सुखं च अनुभिवतुं शक्नोति।
तयोः प्राप्त्यर्थम् एकिस्मिन् राष्ट्रं एकस्यैव सम्प्रदायस्य अनुयायिनां निवासः वा स्यात्, कलहायमानानां नाना साम्प्रदायिकानां
कलहं शमियतुं प्रशासनं वा सम्प्रदाय-विशेषपक्षपात-शून्यं स्यात्। प्रथमिवकल्पस्य दुर्घटत्वान् द्वितीयः एव प्रायेण
सुधिभिः समर्थते। तस्मादेव रुसनाम्नि भूखण्डे समाजवादि राज्यं स्थापित्तम्। एताद्दशे हि शासने न सम्प्रदाय-विशेषः शासकैः धनादि-साहाय्येन राजकीयाधिकार-पद-प्रदानेन वा
सिवशेषं परिपोष्यते। तत्र हि साम्प्रदायिकताभावनां न्यक्कृत्य सर्वोऽपि लोकः यथागुणं राजकीय-पदेषु नियुज्यते।
रुसादि-भूखण्डानां प्रजासु मिथः सौहार्दवर्धनीम् एतां सम्प्रदायनिरपेक्षां राज्य-पद्भिः भनुसरद्मिः भारत-चीन-भारतीयैशिया
प्रभृतीनां राष्ट्राणां राज्यतन्त्र-कर्णधारैः अपि स्व-स्व-राष्ट्रेषु सैव पद्धितः अङ्गीकृताऽस्ति। तेनैव भारते वर्षे न हिन्दुराज्यम्, न चीनेषु बौद्धराज्यम्, न भारतीयैशियायां मुस्लिमराज्यं खल्विस्त। कतिपयेषु राष्ट्रानरेषु अपि सर्वथा अंशतो वा
एषैव पद्धितः अनुस्त्रियते। पाकिस्तान-सद्दशेषु नानासम्प्रदायवस्तु येषु राष्ट्रेषु न इयं पद्धितः आश्रीयते तत्र न खलु प्रजासु
शान्तिः परस्पर-प्रीतिश्च अवलोक्यते। तस्माद् इदं तावद् अवसातव्यम् –

साम्प्रदायिकतां-शून्य-राज्यानां यः समुच्छ्रयः। संभवी, तं न शक्नोति प्राप्तुं राज्यान्तरं क्वचित्।।

वैदिक साहित्ये तथा संस्कृत साहित्ये सम्प्रदायनिरपेक्षता च साम्यवाद इति विषयभावनायाम् प्रथमतः इदमेव वक्तव्यम्, वेदोहि प्राचीनतमोविद्यते निखलविश्ववाङ्मये। अतएव वैदिकसाहित्ये यानि यानि साम्यवादं च सस्प्रदायनिरपेक्षतां उपजीव्य मन्त्रवाक्यानि ब्राह्मणवाक्यानि च सन्ति तेषां मध्यतः किञ्चिदत्रोपस्थाप्यते।

साम्प्रतं समग्रे अस्मिन विश्वे असाम्योऽपवादाः सम्यक्रूपेण प्रकटिताः । अस्माकं भूमण्डले आतङ्कवादः प्रचलित । अतो गृहे न शान्तिः, विपिने न शान्तिः, पाने न शान्तिः, शयने न शान्तिः, न मन्दिरे 'चार्च' इति मध्येपि अपगताच शान्तिः, अतः भारतीयवैदिकवाङ्मये निहिते साम्यवादे गृहीते अस्माकं देशे शान्तिः पुनः प्रतिष्ठितः भविष्यति ।

वेदिकवाङ्मये सुप्राचीनकालादेव साम्यविषयिणी भावना प्रवहमाना आसीत्। माता भूमि पुत्रोहं पृथिव्या' इति वैदिकीवार्ता। वेदे ऋषिभि: गीयन्ते -'संगच्छध्वं संवद्ध्वं सं वो मनांसि जानताम्। देवाभागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।।'

'समानो मन्त्रः समिति समानी समानं मनः सहचितमेषाम् । समानं मन्त्रमभिमन्त्रयेवः समानेन वो हविषा जुहोमि।।'

'समानी व आकुति समाना हृदयानि व:। समानमस्तु वो मनो यथा व: सुसहासित।।' वर्त्तमानकाले विश्वे साम्प्रदायिकता, पारस्परिकोविभेद एवमादिका वहुविधावस्था परिदृश्यन्ते। सर्वत्र स्थैर्य्यहानिरवलक्ष्यते।

^{*}सुश्री निवेदिता अधिकारी, अध्यापिका, यामिनी राय महाविद्यालयः, वाँकुड़ामण्डलः, पश्चिमवंगप्रदेशः, मोः 7319392999

असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय



BARTA ASHALATA

(Half Yearly Research Journal of Indology & Science)

वार्ता आशालता

(Vol. 9 :: No. 2)
[Nov. 2018 to Apr. 2019]



Debasanskriti Debabani Mandir

http://debasanskriti.blogspot.com

দেবসংষ্কৃত্তি দেববানী মন্দির

(Regd. No. S/IL/26329 of 2004-05)

Fului, Hooghly, (W.B.), Pin. - 712122

সূচীপত্ৰ

				101
0	বিবিধ পুরাণে দেবী মনসা	:	দেবাশিষ অধিকারী	5
	Knowledge of culture and Religion in Padma Purana and its reflection in Assamese Society of Medieval Period.	•	Gagen Kakati	9
۵	সাহিত্যে আধুনিকতার স্বরূপ	:	ঝণ্টু দাস	14
۵	রবীন্দ্রনাথের গানে কীর্তনের প্রভাব	•	ড. শ্রাবণী <i>সেন</i>	21
۵	অদ্বৈতবেদান্তের আলোকে কাব্যিক রসের যথার্থতা নিরূপণ	•	রামদাস বৈরাগ্য	24
	বৈদিক সমাজের প্রেক্ষাপটে বিবাহ–ব্যবস্থা	0	নিবেদিতা হাজরা	29
	নারদ স্মৃতিতে প্রমাণভেদ ঃ একটি অধ্যয়ন	:	প্রিয়ান্ধা চ্যাটাৰ্ল্জী	35
	Yakha's Prashna: Doctrine of Dharma embeded in humanism	0	Parthasarathi Adhikary	41
	Drama of encient India: Rudrachandra Deva's Usaragodaya	0	Nibedita Adhikary	47

Drama of encient India : Rudrachandra Deva's Usaragodaya

Nibedita Adhikary*

Some Stalwart Dramatists of Early India:

Drama or nataka was described as drisya kavya by the litterateurs. Natya or the gandharva Veda which was created by Brahma as the panchcama veda was a combination of natya, nritta, gita and vadhya. Some of the famous dramatists of India thus created excellent drsya kavyas, which were meant to be presented on stage for the audience. Most of the ancient Indian dramatists wrote especially for the elites of the society. Many of these dramatists were also often patronized by the royal courts and many of the heroes and heroines of the Sanskrit dramas had striking similarities with the royal family members. Thus the dramatists often found inspiration for their characters from the members of the family of their royal patrons.

But rudrachandra Deva was rather different one. The subject matter and characters in the drama were beyond the royal family members. He took the theme from the Puranas and mahakavyas.

He patronised literature, art and architecture. He was himself a great writer in Sanskrit. He composed two - dramas in Sanskrit- 'Yayati caritam' and Usharagodaya and other two sanskrit books. Rudra Chandra a Kumaoni King contemporary to Akbar.

Rudra Chandra promoted Sanskrit by sheltering Sanskrit scholars and Sanskrit ritual pundits. Rudra Chandra the Kumaon King contemporary to Akbar did arrange Sanskrit education in his territory. It is said that at the time of Rudra Chandra the Sanskrit scholars and astrologers of Kumaon or Manasbhumi were competent to compete Sanskrit scholars of Banaras and Kashmir.

Rudra Chandra wrote four Sanskrit books. The book 'Usharagadaya was publisheed by Sampurnanand Sanskrit University Banaras. 'Shyainikshastra' written by Rudra Chandra was published by Asiatic Society Kolkata. There are four hundred Shlokas in 'Shyainikshastra'. The other Sanskrit literature 'Yayati Charitam' and 'Traivnikdharmanirnay' written by Rudra Chandra are still unpublished.

There were many Sanskrit scholars in Manasbhumi or Kumaon at the time of Rudra Chandra.

Rudra Chandra built new temples and repaired various old temples as Jageshwar, Kedareshwar. Rudra Chandra (a Kumaoni King contemporary to Akbar) is called "Harsh-Shiladitya' of Kumaon.

General Administration of Rudra Chandra:

Rudra Chandra (a Kumaoni King contemporary to Akbar) is also remembered for his new taxation system on land in Kumaon. His son who was blind by birth Shakti Gusain helped his father

^{*}Nibedita Adhikary, Jamini Roy College, Bankura (W.B.), M: 7319392999

असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय

বাৰ্তা আশালতা

BARTA ASHALATA

(Half Yearly Research Journal of Indology & Science)

वार्ता आशालता

(Vol. 9 :: No. 1) [May 2018 to Oct. 2018]



Debasanskriti Debabani Mandir

http://debasanskriti.blogspot.com

দেবসংষ্কৃতি দেববানী মন্দির

(Regd. No. S/IL/26329 of 2004-05)

Fului, Hooghly, (W.B.), Pin. - 712122

সূচীপত্ৰ

			ત્રુઆ
মনুসংহিতার আলোকে সৃষ্টিতত্ত্ব পর্যালোচনা একটি সমীক্ষা ও মীমাংসা	00	মিঠুন ঘোষ	5
Vedic References on Payasya: An Analytical Study	00	Mrs. Mrinmoyee Samanta	11
পশ্চিমবঙ্গে সংস্কৃত টোল শিক্ষা সমীক্ষা	°	পার্থসারথি অধিকারী	16
শারদ আলেখ্য ও দুর্গা	0	অধ্যাপক নিবেদিতা অধিকারী	19
वर्तमानसमये वेदान्तस्य प्रयोजनम्	00	ड. संजित कुमार दे	23
ज्ञानकल्पतरूगीता : एका समीक्षा	°	ड. अजित कुमार मण्डल:	27
An Empirical Analysis of Level and Trend of Urbanization in Bankura District, West Bengal	8	Susanta Sen, Ashis Pandit & Achintya Adhikary	31

শারদ আলেখ্য ও দুর্গা

অধ্যাপিকা নিবেদিতা অধিকারী*

কৃতিদীপা - শরৎকাল কথাটি মনে এলেই চোখে ভাসে নীল আকাশ, সাদা কাশ, স্বচ্ছ নদীজল, আকাশে পেঁজা তুলোর রাশির মতো মেঘেদের আনাগোনা ও হাল্কা হিমেল হাওয়ার ছোঁওয়া আর মনে পড়ে রবির কবিতা —

এসেছে, শরৎ, হিমের পরশ / লেগেছে হাওয়ার 'পরে, সকালবেলায় ঘাসের আগায় / শিশিরের রেখা ধরে। আমলকী-বন কাঁপে, যেন তার / বুক করে দুরু দুরু পেয়েছে খবর পাতা-খসানোর / সময় হয়েছে শুরু। শিউলির ডালে কুঁড়ি ভরে এল, / টগর ফুটিল মেলা, মালতীলতায় খোঁজ নিয়ে যায় / মৌমাছি দুই বেলা। গগনে গগনে বরষন শেষে / মেঘেরা পেয়েছে ছাড়া — বাতাসে বাতাসে ফেরে ভেসে ভেসে, / নাই কোনো কাজে তাড়া। দিঘি ভরা জল করে ঢল্ ঢল্ / নানা ফুল ধারে ধারে, কচি ধানগাছে খেত ভরে আছে / হাওয়া দোলা দেয় তারে। যে দিকে তাকাই সোনার আলোয় / দেখি যে ছুটির ছবি — পূজার ফুলের বনে ওঠে ওই / পূজার দিনের রবি।

রিয়া - সংস্কৃত সাহিত্যের অন্যতম কবি ভর্তৃহরি রচিত 'ভট্টিকাব্যম্'-এ শরৎকালের বর্ণনা পাই শ্রীরামচন্দ্রের মুখে —

অন্বেষা -

বনস্পতীনাং সরসাং নদীনাং

নির্যায় তস্যাঃ স পুরঃ সমস্তা

তরঙ্গসঙ্গাচ্চপলৈঃ পলাশৈ

সধ্মদীপ্তাগ্নি-রুচানি রেজু

বিম্বাগতৈম্ভীরবনৈঃ সমৃদ্ধিং

কুলানি সামর্যতয়েব তেনুঃ

নিশাতুষারৈর্নয়নাম্বুকঙ্কেঃ উপারুরোদব নদৎপতঙ্গঃ

তেজস্বিনাং কান্তিভূতাং দিশাঞ্চ

চ্ছ্রিয়ং দধানং শরদং দদর্শ।।

র্জ্বালাশ্রিয়ং সাতিশয়ং দধস্তি।

स्राद्माৎপलान्यकूलसप् পদानि।।

নিজাবেলোক্যপহৃতাং পয়োভিঃ।

সরোজলক্ষ্মীং স্থলপদ্মহাসৈঃ।।

পত্রান্তপর্যাগলদচ্ছবিন্দুঃ।

কুমুদ্বতীং তীরতরুর্দিনাদৌ।।

অনুপ - বঙ্গকবি রবি ঠাকুরের কথাতে শরৎলক্ষ্মী ধরা দেয় –

শরৎ তোমার অরুন আলোর অঞ্জলি। ছডিয়ে গেল ছাপিয়ে মোহন অঙ্গুলি।। শরৎ তোমার শিশির ধোওয়া কুন্তলে

বনের পথে লুটিয়ে পড়া অঞ্চলে।

মানিক গাঁথা ওই যে তোমার কঙ্কনে

অধ্যাপিকা নিবেদিতা অধিকারী, ৮৫, শাঁখারী পাড়া রোড, কাঞ্চননগর, পূর্ব বর্ধমান (প.ব.), M : 8900506073